अनुकूलन सीखना

अक्षता एस. बेल्लूदि

इस महामारी ने शिक्षकों के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (जिससे अधिकांश शिक्षक पूरी तरह अनजान थे) के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कौशलों को विकसित करने की ज़रूरत पैदा करके यह दर्शाया है कि 'आवश्यकता सभी अनुकूलनों का आधार है'। इस समय यह कौशल इसलिए आवश्यक हैं ताकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों तक पहुँच सकें। अभी अधिकांश शिक्षकों का उद्देश्य है—एक वयस्क सहयोगी के रूप में विद्यार्थियों के साथ जुड़ना, उनकी बात सुनना कि उनको कैसा महसूस हो रहा है, उन्हें भावनात्मक सहयोग प्रदान करना और हो सके तो उन्हें पढ़ाने की कोशिश करना ताकि वे शिक्षा से पूरी तरह कट न जाएँ।

व्हाट्सऐप ग्रुप, MS टीम्स, गूगल मीट, ज़ूम कुछ ऐसे एप्लीकेशन हैं जिनका उपयोग शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने के लिए कर रहे हैं। ब्लॉग्स लिखने के साथ-साथ यू-ट्यूब वीडियो बनाना व रिकॉर्डिंग करना आदि कुछ अन्य रणनीतियाँ हैं जिनके ज़रिए वे अपने विद्यार्थियों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। कई शिक्षक विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए एनीमेशन वीडियो भी बना रहे हैं। एक-दूसरे से सीखने के लिए भी शिक्षकों द्वारा इन साधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है।

इस महामारी ने शिक्षकों को प्रौद्योगिकी की विविध सम्भावनाओं को खोजने में मदद की है। साथ ही ऑनलाइन माध्यमों को इस्तेमाल करने का एक ज्ञानाधार (Knowledge base) बनाया है। इससे उन्हें स्थिति के सामान्य हो जाने पर अपने विद्यार्थियों को मिश्रित शिक्षण (Blended learning)—जिसकी कल्पना हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP) में की गई है —के अनुभव प्रदान करने में मदद मिलेगी।

मैं इस लेख में सरकारी स्कूलों के कुछ शिक्षकों के प्रयासों और विद्यार्थियों से जुड़े रहने के लिए नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने में उनकी सीखने की अवस्था (learning curve) को साझा करूँगी। सफलता की कहानियाँ ज़्यादातर उन शिक्षकों की हैं जिन्होंने अपने काम के चलते विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ-साथ समुदायों से भी अच्छा रिश्ता क़ायम किया था। इससे उन्हें अपने विद्यार्थियों तक पहुँचने और दूर रहकर भी उनके साथ जुड़ने में मदद मिल रही है।

शिक्षकों के प्रयास

केस स्टडी 1

सोमू सर हमारे ज़िले के सक्रिय शिक्षकों में से एक हैं। लॉकडाउन के दौरान सीखने में अपने विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए सोमू सर ने उसी गाँव में रहने वाले स्कूल के पूर्व विद्यार्थियों की मदद ली। उनके 18 विद्यार्थियों में से सिर्फ़ 6 के पास ही स्मार्टफ़ोन थे। *व्हाट्सऐप ग्रुप* के ज़रिए शिक्षक द्वारा भेजे गए दैनिक कार्यों को पूरा करने में बाक़ी बच्चों की मदद पूर्व विद्यार्थियों ने की। पूर्व विद्यार्थियों (जो अब कॉलेज में थे) ने यह भी सुनिश्चित किया कि बच्चे अपना कार्य समय से पूरा करें। पूर्व विद्यार्थियों की मदद से ही सोमू सर ने वीडियो कॉल्स के ज़रिए अपने विद्यार्थियों से जुड़ने का प्रयास किया ताकि उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्सहित किया जा सके।

अपने पसन्दीदा शिक्षक को वीडियो कॉल पर बात करते देखकर विद्यार्थी और उनके अभिभावक बहुत उत्साहित थे। सोमू सर, जो दो महीनों के लम्बे अन्तराल के बाद अपने विद्यार्थियों को देख पा रहे थे, वे भी उतने ही उत्साहित थे। हालाँकि शुरुआत में उनके कुछ विद्यार्थी खुलकर अपनी बात कहने से थोड़ा कतराते थे। पर उनके अभिभावक नियमित रूप से सर से बात करते थे और गाँव के आस-पास की दैनिक घटनाओं को साझा करते थे। सोमू सर ने इस अवसर का उपयोग समुदायों में कोरोनावायरस से निपटने के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए भी किया था। शिक्षा में डिप्लोमा पूरा कर चुके उनके एक वरिष्ठ विद्यार्थी ने उन बच्चों के लिए अँग्रेज़ी की कक्षाएँ शुरू की हैं, यह बात हमें बताते हुए सोमू सर काफ़ी ख़ुश हो रहे थे।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से कार्य

शिक्षकों के लिए स्कूल खुलने के बाद जैसे ही सोमू सर गाँव पहुँचे, उनके सभी विद्यार्थी उन्हें देखने के लिए दौड़ते हुए आए। उनका हाथ पकड़ा और उनसे बात की। लेकिन अफ़सोस कि सर को उन्हें वापिस घर भेजना पड़ा। मुँह लटकाए वे सभी वापिस चले गए। यह बात सोमू सर को बहुत मार्मिक लगी। बहुत-से विद्यार्थियों ने स्कूल आने की अनुमति माँगी। लेकिन सर असहाय थे क्योंकि आदेशानुसार स्कूल में कक्षाएँ नहीं लगा सकते थे।

बच्चे अक्सर गाँव के मन्दिर के पास खेलते थे। फिर जून माह में किसी एक दिन सोमू सर ने स्कूल विकास और निगरानी समिति (SDMC) के सदस्यों और कुछ अभिभावकों की मदद से मन्दिर परिसर में ही कक्षाएँ शुरू कीं। सोमू सर जानते थे कि यह जोखिम भरा था। पर चूँकि यह एक साझा निर्णय था, इसलिए उन्होंने आगे बढ़ने का फ़ैसला लिया।

बच्चों को पढ़ाने के लिए सर अब *नली-कली* कार्ड्स और *ओदु कर्नाटका* प्रोग्राम के तहत सरकार द्वारा प्रदान की गई किताबों का उपयोग कर रहे हैं। *ओदु कर्नाटका* प्रोग्राम बच्चों को धाराप्रवाह पढ़ने की बुनियादी क्षमता और संख्याओं को पहचानने व उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्रियों की मदद से मूलभूत अंकगणितीय संक्रियाओं को करने की क्षमता हासिल करने में समर्थ बनाने के लिए शुरू किया गया था।

केस स्टडी 2

श्रीगौरी मैडम हमारे ज़िले के सबसे प्रेरक शिक्षकों में से एक हैं। पिछले वर्ष शुरू किए गए एक *व्हाट्सऐप ग्रुप* के ज़रिए उन्होंने अपने विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ जुड़ना शुरू किया। शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एवं अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा संचालित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने और उनकी बेटी के स्कूल द्वारा संचालित ऑनलाइन कक्षाओं से उन्हें अपनी ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू करने का विचार आया।

श्रीगौरी मैडम ने इसके बारे में अभिभावकों से भी बात की। यह ध्यान देना दिलचस्प है कि वह हमेशा से ही अपने सभी कार्यों में अभिभावकों को शामिल करने में सक्षम रही हैं और इस बार भी उन्होंने अभिभावकों को ऑनलाइन कक्षाओं के लिए मना लिया। जल्दी ही उन्होंने उस क्षेत्र में कार्यरत फ़ाउण्डेशन के स्रोत व्यक्तियों से मदद माँगी। फिर एक समय तय करके अभिभावकों के साथ कई अभ्यास सत्र किए और फिर कक्षाएँ शुरू कीं। प्रारम्भ में कई अभिभावकों को दिक़्क़त आई, लेकिन श्रीगौरी मैडम ने ज़ूम का उपयोग करने के लिए विस्तृत निर्देश के साथ वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग बनाईं जिससे अभिभावकों को जुड़ने की प्रक्रिया समझने में मदद मिली। कुछ शिक्षित अभिभावकों ने *ज़ूम* का उपयोग करने से परिचित होने में दूसरे लोगों की मदद भी की।

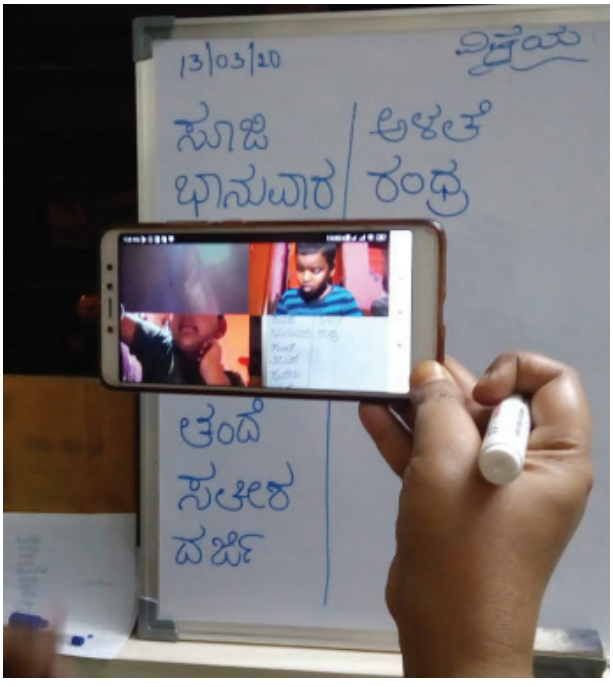

श्रीगौरी मैडम की ऑनलाइन क्लास

अपने सभी विद्यार्थियों को इतने लम्बे समय बाद पहली बार फ़ोन के ज़रिए देख पाना उनके लिए किसी बड़ी उपलब्धि जैसा था। उनके विद्यार्थी भी उन्हें देखकर रोमांचित थे। जब बच्चों ने उन्हें 'मिस, मिस!' कहा और बताया कि वे उन्हें देख सकते हैं, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे वे वापिस अपनी कक्षा में ही आ गई हों।

ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू होने के एक हफ़्ते बाद गाँव के पंचायत अध्यक्ष ने मैडम को फ़ोन किया और उनकी पहल के लिए उनका आभार व्यक्त किया, जिससे उन्हें प्रेरणा मिली। वह बताती हैं कि यदि अभिभावक काम की वजह से शहर से बाहर हों, तो भी वे सुनिश्चित करते हैं कि वे समय पर लौटें और अपने बच्चों को अपना फ़ोन दें ताकि बच्चे कक्षा में शामिल हो सकें। अब उन्होंने अपनी ऑनलाइन कक्षाएँ *गूगल मीट* पर सफलतापूर्वक स्थानान्तरित कर ली हैं। बच्चे ख़ुद इसे संचालित कर रहे हैं और आसानी से कक्षाओं में भाग ले रहे हैं।

श्रीगौरी मैडम हर दिन एक स्क्रीन रिकॉर्डर ऐप से अपना सत्र रिकॉर्ड करती हैं और उसे अभिभावकों के साथ साझा करती हैं। वह सुनिश्चित करती हैं कि बातचीत के दौरान अभिभावक बच्चों के साथ बैठें। वह अँग्रेज़ी माध्यम की कक्षा 2 के विद्यार्थियों को पढ़ाती हैं। मैडम शाम को छह से नौ बजे के बीच तीन बैचों में कक्षाएँ चलाती हैं। प्रत्येक बैच में दस बच्चे होते हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उन्होंने विशेष रूप से एक व्हाइटबोर्ड की व्यवस्था की है। वह वर्कशीट भी तैयार करती हैं जो एक फ़ोटोकॉपी की दुकान पर दी जाती हैं। वहाँ से अभिभावक उन्हें लेते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनके बच्चे वर्कशीट पर काम करके उसे *व्हाट्सऐप ग्रुप* पर शेयर करें। श्रीगौरी मैडम एक *यू-ट्यूब* चैनल भी चलाती हैं जहाँ वह बच्चों के साथ किए अपने सभी कार्यों को पोस्ट करती हैं ताकि अभिभावकों को अपने बच्चों की प्रगति का अन्दाज़ा हो ।

मैडम अपनी ऑनलाइन कक्षाओं को लेकर बहुत उत्साहित और ख़ुश हैं कि वह अपने विद्यार्थियों तक पहुँच पा रही हैं तथा उनका सहयोग कर पा रही हैं। उन्होंने एक उदाहरण भी साझा किया। एक लड़का जो उनकी कक्षा में कभी नहीं बोलता था, अब ऑनलाइन कक्षाओं में आत्मविश्वास से अपनी बात रखता है। मैडम कहती हैं, "बच्चे हर दिन नई चीज़ों की तलाश करते हैं। बतौर शिक्षक यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम सीखने-सिखाने को सुगम बनाने के नए तरीक़े खोजते रहें।"

केस स्टडी 3

सिरसी की शम्शिया मैडम पाँचवीं से आठवीं कक्षा के अपने विद्यार्थियों के साथ एक दिलचस्प रणनीति से काम करती हैं। उनके ऑनलाइन जुड़ाव की शुरुआत 'स्पोकन इंग्लिश' की कक्षाओं से हुई, जो वह बच्चों के अभिभावकों के लिए फ़ोन पर संचालित करती थीं। इससे उनके कुछ विद्यार्थी भी प्रेरित हुए। वे चाहते थे कि मैडम उन्हें दैनिक आधार पर कुछ कार्य दें ताकि वे भी अपनी अँग्रेज़ी पर काम कर सकें।

मैडम के *इंग्लिश क्लब* के प्रतिभागी और उनके स्कूल के पूर्व विद्यार्थी उन बच्चों की मदद कर रहे हैं जिनके पास स्मार्टफ़ोन नहीं हैं। हालाँकि गाँव में नेटवर्क की दिक़्क़त थीं, पर ऑडियो क्लिपिंग, छोटे वीडियो आदि साझा किए गए। इन समूहों को अलग-अलग कार्य और फीडबैक भी दिए गए। अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए *व्हाट्सऐप ग्रुप* के माध्यम से ड्राइंग, निबन्ध लेखन, वाद-विवाद, पहेलियाँ पूछना और अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

अब जब शिक्षकों के लिए स्कूल खुल गए हैं तो शम्शिया मैडम सीखने के विविध परिणामों को प्राप्त करने में अपने विद्यार्थियों की मदद करने के लिए ख़ुद के ख़र्चे से वर्कशीट प्रिंट करती हैं। अभिभावकों के ज़रिए बच्चों तक कार्य पहुँचाए जाते हैं। दिए गए कार्यों को समझाने और बच्चों के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मैडम अपने प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से कॉल करने की पूरी कोशिश करती हैं। शम्शिया मैडम बच्चों तक पहुँचने और उन्हें जोड़े रखने में स्कूल समुदाय के सदस्यों और पूर्व विद्यार्थियों की भूमिका को अहम मानती हैं।

कुछ बाधाएँ

यह तीन उदाहरण हैं जिनमें शिक्षकों ने अपने-अपने तरीक़े आज़माए और महामारी के दौरान अपने विद्यार्थियों से जुड़े रहने के नए-नए विचार सामने रखे। हालाँकि विद्यार्थियों तक पहुँचने में शुरुआती समस्याएँ ज़रूर रहीं, पर शिक्षक ख़ुद को प्रौद्योगिकी सम्बन्धी व्यावहारिक कौशलों से प्रशिक्षित करने और अपने विद्यार्थियों को सफलतापूर्वक जोड़ने में सक्षम हुए।

इन सब उदाहरणों के बावजूद शिक्षक अपने कई विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, इनमें से अधिकांश ऐसे हैं जिनके पास स्मार्टफ़ोन नहीं हैं। स्मार्टफ़ोन अगर जुटा भी लिया जाए तो कुछ अभिभावक इंटरनेट का ख़र्चा नहीं उठा सकते हैं। कई तो ऐसे भी हैं जिनके पास एक साधारण फ़ोन भी नहीं है। ऐसे घरों में जहाँ अभिभावक दो जून की रोज़ी-रोटी के लिए भी जूझते हों, शिक्षा को सबसे कम तरज़ीह दी जाती है। परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए बच्चे खेतों और अन्य जगहों में मज़दूरी का काम करते हैं। इन समस्याओं को देखते हुए सामाजिक असमानता के बढ़ने की आशंका मन को जकड़ लेती है। स्कूल और शिक्षा ही इसका एकमात्र उपाय हैं।

अक्षता एस. बेल्लूदि कोप्पल ज़िला संस्थान, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं। सार्थक शिक्षा के तरीक़ों को समझने के लिए उन्होंने वैकल्पिक स्कूलों में काम किया है। उन्हें अनुभवात्मक शिक्षण, घूमना और आदिवासियों की स्थानीय ज्ञान प्रणाली की पड़ताल करने में दिलचस्पी है। उनसे **akshata.belludi@azimpremjifoundation.org** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

महामारी से प्रभावित बच्चों में से सबसे अधिक प्रभावित वंचित समुदायों के बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, हुए हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि बच्चे अपने सीखने की जगहों से दूर रहने पर मजबूर हो गए हैं। वंचित परिवार के बच्चों के लिए स्कूल एक सुरक्षित स्थान होता है जो उन्हें न केवल ज्ञान और आवश्यक जीवन-कौशल प्रदान करता है, बल्कि विभिन्न शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से अपने सहपाठियों के साथ जुड़कर उनकी मनो-भावनात्मक ख़ुशहाली को भी सुनिश्चित करता है। बच्चों के जीवन के इतने महत्त्वपूर्ण विकासात्मक चरण में इन सब जगहों का अभाव उनके सीखने और समग्र विकास के लिए एक ख़तरा है।

- शुभम गर्ग और विष्णु गोपाल मीणा, 'शिक्षा की पुनर्कल्पना', पेज 102